

कथा

किसी बहुराष्ट्रीय कम्पनी का प्रबंधन एक उत्पाद का मूल्य तय करने की क्षमता और समझ रखता है, व्यवसाय केभीतर उसका महत्व, ब्रांड की ताक़त, और निवेश कहाँ जाना चाहिए।

उनका मूल क्षेत्र वही रहता है: योजना, कार्यक्रम, प्रक्रिया — बाक़ी सब कुछ उसी ढाँचे के भीतर रहता है।

यही उनका काम है, और इसी केलिए उन्हें भुगतान मिलता है। इसकेबाद आते हैं करियर में तरक्की, वेतन, फ़ायदे, स्टॉक योजनाओं का अनुकूलन — पर यह कभी तय नहीं होता कि यह सब उसी कम्पनी के भीतर होगा।

जिसने कभी भीतर से काम नहीं किया, वह सोच सकता है कि कोई मैनेजर उस कम्पनी को क्यों छोड़े, जिसने उसे बनाया, जब वहाँ अच्छा कर रहा हो।

उनके मन में पहली चीज़ कभी पैसा नहीं होता। वह करियर होता है — शिखर तक की चढ़ाई।

लोग अक्सर ठीक तभी गिरते हैं जब उन्हें लगता है वे पहुँच गए, क्योंकि पैसा हमेशा केलिए हर ग़लती नहीं ढाँक सकता, और ऑकड़ें भी हमेशा केलिए छिपे नहीं रह सकते। तभी प्रबंधकीय गिलोटिन गिरता है — जिससे बचना नामुमकिन है।

पर यह सब कॉर्पोरेट कथा से कैसे जुड़ता है?

कैथोलिक चर्च, एप्पल, लोरियाल, नाइकी, मर्सिडीज़ — और अन्य — जैसी संस्थाओं को चलाने वाले लोग यह अच्छी तरह समझते हैं: एक उत्पाद को उपभोक्ताओं की ज़रूरत होती है, मुनाफ़ा कमाना ज़रूरी है, और उसकी शेल्फ़-लाइफ़ सीमित होती है। दूसरी ओर, कथा एक ऐसी कहानी है जिसे पाठकों की ज़रूरत नहीं, क्योंकि हर इंसान खुद-ब-खुद उससे जुड़ जाता है — और यही बात उसे शाश्वत बनाती है।

उदाहरणों की ज़रूरत नहीं — वे बहुत स्पष्ट हैं। ऑकड़ों की भी ज़रूरत नहीं, क्योंकि इसे मापा नहीं जा सकता। इसके असर संज्ञानात्मक हैं, और यही इसे अनूठा बनाता है।

कम्पनियाँ अपने उत्पाद बेचने केलिए वेब सर्च में ज़गह घेरने केलिए भुगतान करती हैं। कथा वेब की बेहतर ज़मीन पर बिना किसी भुगतान के क़ब्ज़ा कर लेती है — कम-से-कम वह कथा, जिसे सच्चे मूल्य वाली मान्यता मिलती है।

और यहीं सबसे बड़ी चोट है: कल्पना कीजिए कि एप्पल की अपनी ही कथा केभीतर कहीं, किसी ने नोकिया केफ़ोनों का प्रचार शुरू करने का फ़ैसला कर लिया। आपको क्या लगता है क्या होगा?

ठीक वही पल होगा जब शेयरधारकों का गिलोटिन गिरेगा — दस सेकंड से भी कम में — और लॉनमोवर से भी सफ़ाई से काटना शुरू कर देगा। क्योंकि घमंडी और मूर्ख केबीच कोई रेखा नहीं होती: दोनों सोचते हैं वे जीत रहे हैं, दोनों

सोचते हैं वे सम्भावनाओं और समय के साथ खेल रहे हैं — एक ऐसी लड़ाई के भीतर जिसे वे बिल्कुल अकेले लड़ रहे हैं, और किसी ने उन्हें यह बताने की ज़हमत तक नहीं उठाई।

यही है कथा: उस किसी की कहानी जिसके अस्तित्व की आपने कभी उम्मीद नहीं की थी — पर जो असली है।

फ़र्दिनान्दो

Ferdinando Frega — gillettenarrative.com